होनी तो हो के रहे

एक बार गरुण जी का एक ब्राह्मण भक्त कहीं रहा करता था। एक दिन काल उसके पास से उसे तिरछी नजर से देखता हुआ निकल गया। यह देखकर ब्राह्मण व्याकुल होने लगा। उसने गरुण जी को मन से याद किया। गरुण जी ने तुरंत ही दर्शन दिये, और अपने ब्राह्मण भक्त से याद करने का कारण पूछा।

उस ब्राह्मण ने अपनी सारी व्यथा गरुण जी को कह सुनाई। गरुण जी ने उसे सांत्वना देते हुए कहाः "तू तनिक भी व्यथित न हो। तू मेरी पीठ पर बैठ जा, और मैं तुझे सात समुंदर पार एक पर्वत की कंदरा में छोड़े देता हूँ। वहाँ काल भी न पहुंच सकेगा।"

ऐसा कहकर गरुण जी काल के पास पहुंचे। उन्होंने काल से पूछाः "तुमने मेरे भक्त को टेढ़ी निगाह से क्यों देखा?" काल ने गरुण जी को उत्तर देते हुए कहाः "उसकी मृत्यु सात समुंदर पार एक पर्वत की कंदरा में होनी है। मैं ही उसे सांप बनकर डसूँगा। परंतु वह यहाँ बैठा हुआ था। इसलिये मैंने सोचा कि यदि मैं उसे डरा सकूँ तो वह निश्चय ही आपको पुकारेगा और तब आपही उसे सात समुंदर पार उस पर्वत की कंदरा में पहुंचा सकते हैं।"

ऐसा जानकर गरुण जी वहाँ पहुंचे और उन्होंने उस ब्राह्मण भक्त को सांप के काठने की वजह से मृत पाया। इससे सिद्ध होता है कि भगवान ने मृत्यु तथा अन्य सभी घटनाओं का समय निश्चित किया हुआ है। इसी संदर्भ में सूरदास जी की एक बहुत ही सुंदर रचना है।

तीन लोक भावी के बस में, भावी वश न परे।
सूरदास होनी सो होनी, क्यों मन सोच करे।।
करम गति टारे नाहीं टरे।

{इस रचना का अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य की उसके पिछले जन्म के कर्मानुसार ही गति होती है। और उसको बदलना किसी के लिये भी संभव नहीं है। पुराने कर्मों का फल तो सब ही को भोगना पड़ता है चाहे शिष्य हो अथवा गुरु। इसीलिये इन सब बातों के लिये अधिक सोच-विचार न करते हुए, बस निष्काम भाव से कर्म में लिप्त रहना चाहिए। भगवान का खूब भजन करना चाहिए। सदैव परमानंद में मग्न रहना चाहिए।}

बोलो हर-हर महादेव